डॉ॰ भावना की गजलों में स्त्री का सामाजिक यथार्थ

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

शोध निर्देशिका

डॉ विनीता कुमारी

एसोसियेट प्रोफेसर

डॉ एल॰ के॰ वी॰ डी॰ महाविद्यालय, ताजपुर

शोधार्थी

सुफिया खातून

रोल क्रमांक: 22090511

Scanned with AnyScanner

विषय:- डॉ. भावना की ग़ज़लों में स्त्री का सामाजिक यथार्थ

भूमिका-

ग़ज़ल हिन्दी की अपनी विधा नहीं है, यह उर्दू की प्रमुख विधा है। उर्दू में ग़ज़ल की परंपरा फ़ारसी से आई है। फ़ारसी ग़ज़ल की परम्परा जब उर्दू में आई तो भारत के विभिन्न साहित्यिक केन्द्रों पर इसका विकास एवं परिष्कार हुआ। उर्दू फ़ारसी ग़ज़ल के समानांतर हिन्दी मे यह परम्परा 13वीं शताब्दी से स्फुट रूप में विकसित होती आ रही है। आज हिन्दी मे बिखरी हुई ग़ज़ल के इस सम्प्रदाय को एकत्र कर इसके चिंतन एवं मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। मूलतः ग़ज़ल शब्द अरबी भाषा का है जो प्रेमी और प्रेमिका के वार्तालाप के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। धीरे धीरे ग़ज़ल प्रेम की संकीर्ण परिधि से बाहर निकल कर प्रेम के व्यापक रुप में प्रयोग की जाने लगी और ग़ज़ल के अंतर्गत प्रेमिका के नख शिख वर्णन के स्थान पर पवित्र प्रेम यथा, परिवार प्रेम, ईश्वर प्रेम, देश प्रेम आदि भावनाओं की अभिव्यंजना होने लगी। इस प्रकार ग़ज़ल अपने सकुंचित शाब्दिक अर्थ से हटकर व्यापक स्वरूप में कवियों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी। कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से ग़ज़ल मैड्रिगाल तथा सॉनेट में अनेक समानताएं मिलती हैं।

हिंदी गद्य साहित्य के इतिहास का सूक्ष्म अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि सर्वप्रथम हिंदी में ग़ज़ल लिखने वाले कवि कौन हुए? इस प्रश्न पर विचार करने पर यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी में सबसे पहले आदिकाल के कवि अमीर खुसरो ने गजलें लिखी, जिन्होंने हिंदी ग़ज़लों में आबद्ध शेर भाषा की दृष्टि से हिन्दी और फारसी संगम प्रस्तुत किया। इनकी ग़ज़लों में इश्क़ मुश्क की बातें ही प्रधान रही। एक उदाहरण –

शाबान हिजरा दराजु यूं ज़ुल्फ़ बरोज़े बसलत चु उम्र कोताह

सखी पिया को जो मैं ना देखु तो कैसे काटूं अंधेरी रातियाँ।

इनके पश्चात भक्तिकालीन कवियों ने भी ग़ज़ल लिखी जिनमे कबीरदास जी का नाम लिया जाना आवश्यक जान पड़ता हैं। कबीर जी की एक प्रसिद्ध शेर है-

हमन हैं इश्क माश्ताना हमन को होशियारी क्या

रहे आजाद या जग से हमन दुनिया से यारी क्या।

Scanned with AnyScanner

भक्तिकाल के बाद रीतिकाल फिर आधुनिक काल में हिन्दी मे ग़ज़ल लिखने की विस्तृत परम्परा नजर आती हैं। इस काल में हिन्दी ग़ज़ल समकालीन, आर्थिक और राजनीतिक चेतना एवं सांस्कृतिक अवमूल्यन के विक्षोभ को लेकर चली है। इसमें भारतेंदु सहित उनके मंडल के रचनाकार ग़ज़ल लिख रहे थे। इसके पश्चात जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', मैथिलिशरण गुप्त, गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', शमशेर बहादुर सिंह आदि ने भी ग़ज़ल परंपरा को आगे बढ़ाया। अभी तक ग़ज़ल अपने मूल स्वरूप में ही नज़र आया। लेकिन जब हिंदी ग़ज़ल के क्षेत्र में दुष्यंत कुमार का आगमन हुआ, तब ग़ज़ल का स्वरूप ही परिवर्तित हो गया चूकि ग़ज़ल में इश्क़ माशुक की बातें ही हो रही थी। जब दुष्यंत ने हिंदी ग़ज़ल को माशुक की जुल्फो से उठाकर भूख के दरवाजे पर पटक दिया। वे कहते हैं-

ये अब फिक्र और उदासी का दौर है

फिर कैसे तुम पे शेर कहें रीझते हुए।

दुष्यंत ने हिंदी ग़ज़ल और ग़ज़लकारों की दशा और दिशा को बदला। अब महबूब से प्यारी बातें करने वाले शायर जनता की आवाज़ बन गए। हिंदी ग़ज़ल सम्राट दुष्यंत की परंपरा का बखूबी निर्वहन करती हुई और इसी आवाज़ को आगे बढ़ाने के काम बिहार की प्रसिद्ध महिला ग़ज़लकार डॉ. भावना ने किया। डॉ. भावना का जन्म मुज़फ़्फ़रपुर (बिहार) में हुआ। उनका शिक्षा क्षेत्र एम.एससी, पीएच.डी (रसायनशास्त्र), डी. एन.एच.ई, एल.एल.बी तक रहा।

डॉ. भावना का सम्पूर्ण जीवन हिन्दी ग़ज़ल को समर्पित है, उनकी ग़ज़ल में जो नफासत, नज़ाकत और साफगोई है वहीं वैचारिकी, पारदर्शिता, संवेदनशीलता और आत्मीयता उनके अपने व्यवहार में भी मौजूद है। इनके इस शेर से उनके व्यक्तित्व का परिचय मिलता है-

भले सबकी नजर में बाबरी मैं

असल मे भावनाओं से भरी मैं।

प्रतिष्ठित ग़ज़लकार ज़हीर कुरैशी डॉ. भावना को रेखांकित करते हुए लिखते हैं- "अपने नाम के अनुरूप भावना विचार से अधिक मनुष्य की भावनाओं को महत्व देतीं हैं। संवेदना की शक्ति उनके शेरों के सबसे बड़ा गुण है। विशेष रूप से भारतीय नारी की पीड़ा को वे अपने शेरों में मुखर करना चाहतीं हैं।" एक शेर देखें-

Scanned with AnyScanner

उसके बचने की फिक्र है मुझको

कोख में नर नहीं मादा है।

यथार्थ को डॉ. भावना ने अपने ग़ज़ल का कथ्य बनाया है। डॉ. भावना लिखती हैं- "स्त्री विमर्श के दौर में भले ही हम महिला सशक्तिकरण की बातें करें लेकिन हकीकत कुछ और है। आज मुट्ठी भर ही स्त्रियां दासी और भोग्या के बंधन से मुक्त हो पाई हैं। बहुसंख्यक महिलाएं अपने परिवेश व बाज़ारवाद की चुनौतियों से जूझ रही हैं। उनका दुख और दर्द मेरे भीतर उतर ग़ज़लों में ढल जाती हैं।" यही कारण है जिससे वो एक ग़ज़ल में दर्द को कुछ इस तरह से बयां करती हैं-

हथकड़ियों के सांचो में क्यों ढल बैठी

चूड़ी जैसी रोज़ खनकने वाली वह।

डॉ. भावना के बारे में अशोक मिज़ाज़ कहते हैं- "भावना की ग़ज़लें शायरी के उन मानदंडों को पूरा करती हैं, जो जरूरी है"। अगर स्त्री ग़ज़लकारों की बात करें तो उनका समानांतर कम ही नज़र आता। वह एक ऐसी ग़ज़लकार हैं जो लगातार लिख रहीं हैं। उनका समर्पण ग़ज़ल में ही नहीं बल्कि संपादन, आलोचना और काव्य के क्षेत्र में भी है। वह प्रतिमान बनकर उभरी हैं- अक्स कोई तुम सा, शब्दों की कीमत, मेरी माँ में बसी है, धुंध में धूप, कसौटियों पर कृतियां, हिन्दी ग़ज़ल के विभिन्न आयाम, आदि आदि उनकी ग़ज़ल या आलोचना की प्रामाणिक पुस्तकें हैं। उनकी ग़ज़लों में कई रंग है, वह किसी एक बैनर या किसी एक विमर्श के दायरे में नहीं है यही कारण है कि उनकी ग़ज़लें जहां शोध के केंद्र में हैं, वहीं उत्तर 'महाराष्ट्र विश्विद्यालय' में पाठ्यक्रम का हिस्सा भी हैं। तमाम राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं द्वारा पुरस्कार से सम्मानित की गयी हैं जैसे- बिहार राजभाषा विभाग - महादेवी वर्मा पुरस्कार, अम्बिका प्रसाद दिव्य अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार, भोपाल राजभाषा पाण्डुलिपि पुरस्कार, दुष्यंत कुमार रजत स्मृति सम्मान, अपराजिता सम्मान, लिच्छवी महोत्सव सम्मान तिलका मांझी राष्ट्रीय सम्मान, इत्यादि।

डॉ. भावना ने ग़ज़लों में सुलझे हुए अंदाज़ में ज़िन्दगी की सच्चाई नाप-तोल कर रख दी है। शब्दों की अपनी एक ताकत होती है, शब्द का एक नाम ब्रह्म भी हैं। यह शब्द ईश्वर और जीव को एक श्रृंखला में बाँधने का काम करती है इसी महत्व को समझते हुए डॉ. भावना ने अपने ग़ज़ल संग्रह का नाम (शीर्षक) "शब्दों की कीमत" में शब्द की अहमियत को बयां करती हैं। इस परिप्रेक्ष्य में डॉ. भावना की ग़ज़ल से जब हम गुज़रेंगे तो पता चलेगा कि उनके शब्द बिल्कुल नपे तुले और सटीक होते हैं जैसे-

Scanned with AnyScanner

लाजबंती सरीखी लजाती रही

गोरी घूंघट में मुखड़ा छुपाती रही।

अब लजाने के लिए लाजबंती को छोड़कर दूसरे शब्दों को नहीं रखे जा सकते ठीक इसी तरह वो गोरी के साथ घूंघट का प्रयोग करती हैं। ये शब्द 'अमीर खुसरो' की याद दिलाती हैं। इसी प्रकार-

नदियों के गंदे पानी को घर से निथार कर

चूल्हा जला रही है वो पत्ते बुहार कर।

निथार और बुहार लोक भाषा के शब्द है ऐसे शब्दों का प्रयोग भी भावना जी की ग़ज़लों में खूब हुआ है जो अलग दिखने का एक विषय हो सकता है। इसी तरह अपनी ग़ज़ल संग्रह 'धुंध में धूप' का उद्देश्य भी विपरीत परिस्थितियों से लड़ना है न कि उसे सरेआम तसलीम खम करना। वह दूसरों की खुशी के लिए अपने आप को बदलने वाली शायरा हैं-

तुम्हें हरियालियों से प्रेम है

तो अपना रंग धनी कर रही हूं।

इस तरह हम देखते हैं कि उनके ग़ज़ल में तमाम विषयों को समाहित कर उनका फैला हुआ साहित्य संसार रोमांच का विषय भी है और चिंतन तथा शोध का भी। जनमानस में भ्रांति है कि महिलाएं राजनीति को लेकर उदासीन हैं या अपना मत खुलकर सामने नहीं रखतीं हैं तभी डॉ. भावना उन सभी महिलाओं की आवाज़ बनकर अपने समय का कड़वा सच बोल उठती है-

किसी को वो किसी से जोड़ती है

हवा का रुख सियासत मोड़ती है।

डॉ. भावना खुद भी स्त्री होने के नाते स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों से वाकिफ हैं। अपनी ग़ज़लों में स्त्री जीवन के संघर्षों और समस्याओं को परत-द-परत उकेरने का सफल प्रयास करती हैं। जैसे-

मिला कुछ भी नहीं औरत को अबतक

बदन फिर भी बिचारी तोड़ती हैं।

Scanned with AnyScanner

इस तरह उनके कई शेर स्त्री अस्मिता के केंद्र में हैं, जो स्वाभाविक भी है फिर भी वह स्त्रीवादी नहीं हैं। लैंगिक असमानता पर उनकी पीड़ा साफ झलकती है-

हैं दरीचे न खिड़कियां घर में

भला क्यों खुश हो बेटियाँ घर में।

जैसा कि ज़हीर कुरैशी का भी कहना है कि नारी जीवन की अनुभूतियाँ और संघर्ष उनके शेरों में दिखाई देता है। नारी जीवन की गहरी संवेदनाओं और तकलीफ़ को डॉ. भावना की शायरी बखूबी बयान करती है। यह अनुभूतियां स्व हों या न हों परन्तु इनामी सच्चाई और अनुभूति की गहराई इतनी सघन है कि पाठक की संवेदना को जागृत कर उसे सोचने विचारने पर मजबूर कर देती है जैसे-

है ये द्वापर नहीं फिर भी क्यों अब तक

द्रोपदी लग रही दांव पर आज भी।

उनकी ग़ज़लों में निरन्तर खोज करने की कोशिश है वह समाज से बेखबर भी नहीं है इसलिए समाज में घटित होने वाले हर खतरे से सामाज को हमेशा आगाह करती है। इनकी ग़ज़ल जीवन के हर पहलू को छूते हुए दिल और दिमाग को झकझोरने का काम करती है। वे बहुत ही बारीकी से सामाजिक विसंगतियों को रेखांकित करने का भरकस प्रयास करती हैं, जिसमें सफलता भी मिली है। उनकी ग़ज़लों का हर शेर विशेष अर्थ का बोध कराता है। उन्होंने अपनी ग़ज़लों में सामाजिक संदर्भ को बड़ी सूक्ष्मता के साथ पिरोया है। बात चाहे पाप-पुण्य की हो चाहे मानसिक दुर्बलताओं की इन सब पर कवयित्री की नज़र है-

मन के बाहर मन के भीतर शोर बहुत है

मंत्र चले वो देखो जपने आधे-आधे।

भाषा शैली की दृष्टि से देखें तो डॉ. भावना ने ऐसे शब्दों का चयन नहीं किया है, जिसके लिए पाठकों को शब्दकोश ढूंढना पड़े। उन्होंने हिंदी, उर्दू, अंग्रेज़ी मिश्रित शब्दों से अपने भावों को व्यक्त किया है। उनकी ग़ज़लों की भाषा शैली शिल्प और बिंब उन्हें भीड़ से अलग खड़ा करती है। यही वजह है कि शेर के मक्ते में तखल्लुस का प्रयोग न करना शायरा का अपना प्रयोग हो सकता है, जो शायद शायरी को एक नया जामा पहनाये। डॉ. भावना के अशआर में काफिया, रदीफ, बहर सब कुछ है, लेकिन उसके साथ वह फिक्र और कथ्य भी है जिससे कोई शेर मुकम्मल होता है।

Scanned with AnyScanner

प्रस्तावित शोध विषय की आवश्यकता-

प्रस्तावित शोध विषय **"डॉ. भावना की ग़ज़लों में स्त्री का सामाजिक यथार्थ"** पर शोध करने की जिज्ञासा एक प्रश्न से शुरू हुआ था। डॉ. भावना की एक ग़ज़ल पढ़ते हुए उनके ग़ज़ल संग्रह तक पहुंचना बहुत कठिन कार्य था। इस स्तर का लेखन होने के बावजूद भी कोई खास जानकारी नहीं मिल रही थी। जो लोग लगातार ग़ज़ल से जुड़े हुए हैं उनतक ही इनकी पहुँच है. आज सबकुछ डिजिटल होने के बाद भी डॉ. भावना तक पहुँचना और उनके ग़ज़लों को देखना समझना दुरूह कार्य था। ऐसे में ये जरूरत महसूस हुयी कि क्यों न इस रचनाकार पर शोध किया जाये। क्योंकि इनकी ग़ज़लों में हर वो बात है जो एक रचनाकार को विशिष्ट बनाता है।

प्रस्तावित शोध का महत्व-

ग़ज़ल लेखन की परंपरा भले ही बहुत पुरानी रही हो, लेकिन ग़ज़ल का स्वरूप और उसका अर्थ आम जनता के लिए नहीं था। बाद में जब दुष्यंत ने ग़ज़ल के स्वरूप का परिमार्जन किया तब यह आम जनमानस की आवाज़ बन गया। ग़ज़ल के क्षेत्र में ग़ज़ल संग्रह तो बहुत प्रकाशित हुए हैं लेकिन शोध कार्य का अभाव नज़र आता है। ऐसे में प्रस्तुत विषय पर शोध कार्य आवश्यक हो जाता है। इस शोध से डॉ. भावना के रचनाक्रम के बारे में भी साहित्य जगत को अवगत कराना है ताकि उनके विषय और कथ्य के बारे में भी विस्तार से चर्चा हो सके। डॉ. भावना के व्यक्तित्व पर भी इस शोध के माध्यम से प्रकाश डाला जाएगा। इस शोध से हिन्दी ग़ज़ल के क्षेत्र में हो रहे बदलाव को भी रेखांकित करने का प्रयास होगा।

पूर्वकृत शोध-

प्रस्तावित शोध विषय डॉ. भावना की गज़लों में स्त्री और सामाजिक यथार्थ का विवेचन की वृहत संभावना है। हिंदी ग़ज़ल पर विभिन्न विश्विद्यालयों में अनेक शोध हैं लेकिन डॉ. भावना की ग़ज़ल पर कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ है। प्रस्तुत शोध विषय पर मेरी जानकारी में अब तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। अतः यह कार्य बिल्कुल नया और मौलिक होगा।

शोध की परिकल्पना-

प्रस्तुत शोध कार्य हिंदी के ग़ज़लकार डॉ. भावना पर आधारित है जिसमें डॉ. भावना द्वारा रचित विविध विषयों से संबंधित गज़लों का अध्ययन किया जाएगा। मेरी समझ में सामाजिक यथार्थ को डॉ. भावना ने अपनी ग़ज़लों में स्थान दिया है। डॉ. भावना की ग़ज़लें समाज के दबे कुचले, किसान,

Scanned with AnyScanner

मजदूर की आवाज़ है और इससे साहित्य तो संपूरित हो ही रहा है साथ में सत्ता में बैठे नीति निर्धारकों का ध्यान भी उनकी तरफ जाता है। प्रस्तुत शोध में इसकी पड़ताल करने का प्रयास किया जाएगा। वर्तमान ग़ज़ल सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि परिदृश्यों को शब्द देता हुआ प्रतीत होता है, उसका भी विश्लेषण किया जाएगा। प्रस्तुत शोध कार्य में सामाजिक यथार्थ को निष्पक्षता से उद्धृत किया जाएगा। साथ ही सामाजिक विसंगतियों को भी रेखांकित किया जाएगा।

शोध की प्रविधि-

प्रस्तावित शोध-प्रबन्ध में सम्बन्धित विषय हेतु उपयुक्त और सम्भावित वृहद स्रोतों के गहन अध्ययन के क्रम में शोधार्थी द्वारा परीक्षण, विश्लेषण, मूल्यांकन और शोध निष्कर्षों की स्थापना के लिए शोध की दोनों मान्य प्रविधियों-आगमन और निगमन का उपयोग किया जाएगा। आगमन-प्रविधि द्वारा वृहत्तर तथ्यों का संकलन, अनुशीलन और परिशीलन किया जाएगा तथा निगमन-प्रविधि द्वारा मंथन के पश्चात् शोध-निष्कर्षों की स्थापना की जाएगी। प्रस्तावित शोध-निष्कर्षों की स्थापना के लिए शोध की दोनों मान्य प्रविधियों आगमन और निगमन का उपयोग किया जाएगा।

शोध अध्यायों का विभाजन-

प्रस्तावना

प्रथम अध्यायः	**ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में ग़ज़ल विधा का स्वरुप**
द्वितीय अध्यायः	**डॉ. भावना का व्यक्तित्व और कृतित्व**
तृतीय अध्यायः	**आधुनिक स्त्री ग़ज़लकारों में डॉ. भावना का स्थान**
चतुर्थ अध्यायः	**डॉ. भावना की ग़ज़लों में सामाजिक यथार्थ और स्त्री**
पंचम अध्यायः	**डॉ. भावना की ग़ज़लों की भाषा और शैली**

उपसंहार

Scanned with AnyScanner

प्रस्तावित शोध ग्रंथों की सूची-

आधार ग्रंथ-

1. डॉ. भावना (2012) अक्स कोई तुम-सा, अभिधा प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. डॉ. भावना (2015) शब्दों की कीमत, अंतिका प्रकाशन, उत्तर प्रदेश।
3. डॉ. भावना (2019) चुप्पियों के बीच, किताबगंज प्रकाशन, राजस्थान।
4. डॉ. भावना (2022) मेरी माँ में बसी है, श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. डॉ. भावना (2023) धुंध में धूप, बोधि प्रकाशन, जयपुर, राजस्थान।
6. डॉ. भावना (2022) कसौटियों पर कृतियाँ, श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. डॉ. भावना (2023) बदलते परिवेश में हिन्दी ग़ज़ल, श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. डॉ. भावना (2022) हिन्दी ग़ज़ल बढ़ते आयाम, श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली।

सहायक ग्रंथ-

1. कुमार विजय, (2024), डॉ. भावना के चुनिंदा अशआर, श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. मिश्र, रामदरश, (2010), 51 ग़ज़लें, डायमंड बुक्स दिल्ली।
3. अस्थाना, रोहिताश्व, (2023), समकालीन हिन्दी ग़ज़ल एक विमर्श. श्वेतवर्णा प्रकाशन नई दिल्ली।
4. ज्ञानप्रकाश, विवेक. (2023), हिन्दी ग़ज़ल की शक्ति और संचेतना, श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. अस्थाना, रोहिताश्व. (2017), हिंदी ग़ज़ल उद्भव और विकास, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. जाफरी, जियाउर रहमान (2014), ग़ज़ल लेखन परम्परा और हिंदी ग़ज़ल का विकास, अनुकृति प्रकाशन, बरेली।
7. डॉ. माधवी (2023), डॉ. भावना की ग़ज़ल धर्मिता विविध आयाम और मूल्यांकन, श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. अहमद सुल्तान (2023), गजलः हिंदी ग़ज़ल, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।

Scanned with AnyScanner

पत्र-पत्रिकाएं :-

1. वागर्थ
2. नया ज्ञानोदय
3. संवदिया
4. आलोचना
5. आजकल
6. साहित्य नंदिनी
7. ग़ज़ल के बहाने
8. प्रेरणा
9. नवल
10. नई धारा

शोधार्थी :
सुफिया खातून
क्रमांक: 22090511

शोध निर्देशिका :
डॉ. विनीता कुमारी
एसोसियेट प्रोफेसर
डॉ. एल. के. वी. डी.
महाविद्यालय, ताजपुर

Scanned with AnyScanner